कीटाणुरोधक साबुन बहुत कारगर नहीं हैं

हाथ धोने के लिए इस्तेमाल होने वाले कीटाणुरोधी साबुन में कीटाणु-मारक घटक ट्राइक्लोसैन होता है, मगर साउथ कोरियन शोधकर्ता का कहना है कि हो सकता है कि कीटाणुरोधक साबुन किसी सामान्य साबुन से बेहतर न हो। उनके द्वारा किए गए अध्ययन को ज़्यादा महत्व इसलिए भी मिला है क्योंकि इसी तरह के पहले किए गए अध्ययनों में भी ट्राइक्लोसैन शंका के घेरे में था।

ट्राइक्लोसैन को उसके कीटाणुरोधी गुण के कारण जाना जाता है। 1970 के दशक में सबसे पहले अस्पताल में हाथ धोने के साबुन के रूप में इसे शामिल किया गया था। फिलहाल ज़्यादातर देशों में उपभोक्ता साबुनों में ट्राइक्लोसैन की अधिकतम मात्रा 0.3 प्रतिशत ही इस्तेमाल करने की अनुमति है। प्रयोगशाला में किए गए कई अध्ययनों में पाया गया था कि इतनी मात्रा वाले साबुन कीटाणुओं को मारने में साधारण साबुन जैसे ही होते हैं। अर्थात इतनी मात्रा कीटाणुओं को मारने में प्रभावी नहीं है।

इसके अलावा, ट्राइक्लोसैन एलर्जी और कैंसरकारी अशुद्धियों जैसे विभिन्न प्रतिकूल प्रभावों की रिपोर्टों के चलते विवादास्पद बना हुआ है। दिसम्बर 2013 में यूएस के खाद्य और औषधि प्रशासन ने यह अनिवार्य कर दिया था कि कीटाणुरोधी साबुन निर्माता को साबित करना होगा कि उनका साबुन सुरक्षित और प्रभावी है।

कोरिया युनिवर्सिटी के मिन-सुक री और उनके साथियों ने बताया है कि उन्हें पक्का सबूत मिला है कि ट्राइक्लोसैन-युक्त साबुन साधारण साबुन से बेहतर नहीं है। वे मानते हैं कि उनका अध्ययन पिछले हुए अध्ययनों से ज़्यादा सटीक है क्योंकि उन्होंने केवल एक ही चीज़ 0.3 प्रतिशत ट्राइक्लोसैन की उपस्थिति और अनुपस्थिति को बदला, शेष अन्य कारकों को वैसे ही रखा ताकि स्पष्ट परिणाम प्राप्त हो सकें।

इस टीम ने 20 बैक्टीरिया स्ट्रैन को हटाने के लिए साधारण साबुन और ट्राइक्लोसैन-युक्त साबुन आज़माने की कोशिश की जिसमें 20 सेकंड के लिए कमरे के तापमान पर रखा और बाद में धीरे-धीरे तापमान को बढ़ाया। ये वही परिस्थितियां जो घर पर हाथ धोते समय होती हैं। इसके अलावा, उन्होंने वालंटियर्स के हाथों को *सेरेशिया मार्सेसेन्स* नामक बैक्टीरिया से भी संक्रमित किया और यह जांच की कि प्रत्येक साबुन कितनी अच्छी तरह से बैक्टीरिया हटाने में सक्षम है।

परिणामों से पता चला कि दोनों ही साबुनों की कीटाणुनाशक गतिविधि दोनों तापमानों पर लगभग एक-सी रही। हालांकि ट्राइक्लोसैन-युक्त साबुन का इस्तेमाल 9 घंटे तक जारी रखने पर उसका कीटाणुनाशक प्रभाव काफी अधिक दिखाई दिया।

री का कहना है कि ईमानदारी से हम इस परिणाम की उम्मीद ही कर रहे थे। ट्राइक्लोसैन का कीटाणुरोधक प्रभाव उसकी सांद्रता और समय पर निर्भर करता है। बाज़ार में बिकने वाले कीटाणुरोधक साबुनों में 0.3 प्रतिशत से भी कम ट्राइक्लोसैन मिला होता है और हाथ धोने में कुछ सेकंड का समय ही तो लगता है।

यूएस स्थित नार्थ केरोलिना युनिवर्सिटी के एलिसन ऐलियो का कहना है कि यथार्थ में इस्तेमाल होने वाले ट्राइक्लोसैन उत्पाद ज़्यादा फायदेमंद नहीं होते। उन्होंने ट्राइक्लोसैन के और भी कई उत्पादों पर भी शोध किया है।

दूसरे शोधकर्ताओं का मानना है कि विज्ञान के परिप्रेक्ष्य से काफी रोचक और अच्छा अध्ययन किया गया है। मगर साबुन का आकलन करने के लिए इतना पर्याप्त नहीं होगा। ***(स्रोत फीचर्स)***